रत्नमाला

कबीर, सूर, तुलसी, रहीम

वृच्छ कबहुँ नहिं फल भखैं, नदी न संचै नीर ।
परमारथ के कारने, साधुन धरा सरीर ।।
कबीरा गर्व न कीजिए, काल गहे कर केस ।
ना जानौं कित मारिहै, क्या घर क्या परदेस।।
निन्दक नियरे राखिये, आँगन कुटी छबाय ।
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय ।।
माया छाया एक सी, बिरला जानै कोय ।
भगता के पाछे फिरै, सनमुख भागै सोय ।। (कबीर)

चरण-कमल बंदौं हरि राई !
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अंधे को सब कछु दरसाई ।।
बहिरौ सुनै, मूक पुनि बोलै, रंक चलै सिर छत्र धराई ।।
सूरदास स्वामी करुनामय, बार-बार बन्दौं तिहि पाई ।। (सूर)

जड़ चेतन गुन दोषमय, बिस्व कीन्ह करतार ।
संत हंस गुन गहहिं पय, परिहरि वारि-विकार ।।
सात स्वर्ग अपवर्ग सुख, धरिय तुला इक अंग ।
तुलै न ताहि सकल मिलि, जो सुख लव सत संग ।।
सचिव, बैद, गुरु तीनि, जो प्रिय बोलहिं भय आस ।
राज, धरम, तन तीनि कर होई बेगि ही नास ।। (तुलसी)

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोरउ चटकाइ ।
टूटे से फिरि ना मिलै, मिले गाँठि परिजाइ ।।
जे गरीब पर हित करें, ते 'रहीम' बड़े लोग ।
कहा सुदामा बापुरो, कृष्ण मिताई जोग ।।
रहिमन देखि बड़न को , लघु न दीजिए डारि ।
जहाँ काम आवै सूई, कहा करै तरवारि ।। (रहीम)

शब्द-अर्थ

वृच्छ- वृक्ष, पेड़

संचै - संचय करे, जमा करे

भखै - खाएँ

परमारथ के कारने - दूसरों के हित के लिए या उपकार करने के लिए

साधुन धरा शरीर - साधुओं ने शरीर धारण किया है।

काल गहे कर केस - मृत्यु के हाथ में तुम्हारी चोटी है।

ना जानौं - न मालूम

निन्दक - निंदा करनेवाले , दोष निकालनेवाले

सुभाय- स्वभाव से, सहज रूप में

बिरला - कोई कोई,

भगता के - भागनेवाले ; भक्त के । (माया और छाया की एक-सी रीति है । छाया भागनेवाले के पीछे रहती है, लेकिन इसकी तरफ यदि मुँह किया जाय तो वह आगे-आगे भागती है । उसी तरह माया भक्तों के पीछे पड़ी रहती है । परन्तु भक्तों के आगे माया की कुछ नहीं चलती । लेकिन जो संसारी जीव 'माया' की यानी– धन-दौलद आदि की लालसा करता है, उसे वे प्राप्त नहीं होते । संसारी जीव हमेशा दु:खी रहता है ।

बन्दौं - वन्दना करता हूँ ।

राई - स्वामी

जाकी - जिसकी

पंगु - जो पैर से चल न सकता हो, लंगड़ा ।

लंघै - लांघता है ।

दरसाई -दिख पड़ता है ।

मूक - जो बोल नहीं सकता, गूँगा,

तिहि- उसके

पाई- पैरों की

जड़ चेतन - निर्जीव तथा सजीव संसार, मूर्ख तथा ज्ञानी

गुन- अच्छे गुण

विस्व - संसार

करतार- ईश्वर, सृष्टि कर्ता

संत हंस- संत रूपी हंस (वैसे ही संत भोग-वासना छोड़ सन्मार्ग पर चलता है । कहते हैं हंस दूध पी जाता है पानी छोड़ देता है ।)

गुन गहहि पय - सद् गुण रूपी दूध ग्रहण करता है।

परिहरि - छोड़कर

वारिविकार - पानी रूपक विकार

सात वर्ग - पुराणों में पृथ्वी के ऊपर सात लोक माने गए हैं :- १. भूलोक (२) भुव: लोक (३) स्व:लोक (४) मह: लोक (५) जन लोक (६) तप:लोक (७) सत्यलोक । ये ही सात वर्ग हैं ।

अपवर्ग सुख - मोक्ष का सुख, जन्म -मरण का चक्कर छूट जाने पर आत्मा को जो सुख मिलता है ।

तुला इक अंग - तराजू के एक तरफ या एक पलड़े में रखकर

लव - क्षण भर

सचिव - मन्त्री, सलाह देनेवाला तथा काम-काज देखने वाला

बैद- वैद्य

तीनि - तीन

भय आस- भय तथा आशा के कारण

बेगि ही - जल्दी से

मत तोरउ चटकाइ - चटका कर मत तोड़ो, प्रेम बंधन मत बिगाड़ो,

टूटे से गाँठि परिजाइ- अटूट धागे को झटका देने से वह टूट जाता है । फिर मिल नहीं सकता । उसे जोड़ने से एक गाँठ पड़ जाती है । गाँठ में मिठास नहीं होती । ठीक वैसे प्रेम के धागे को विवाद का झटका लगे तो वह टूट जाता है । प्रेम भाव नष्ट हो जाता है । उसे फिर से जोड़ने पर भी मन में एक गाँठ पड़ जाती है ।

बड़ लोग- बड़े लोग, महान व्यक्ति

कहा- कहाँ, क्या

सुदामा - कृष्ण की वाल्यावस्था के सखा, जो बहुत गरीब थे। उन्हें जब मालूम हो गया कि कृष्ण द्वारिका के राजा बन गये हैं, तो पत्नी के बहुत कहने-सुनने पर तथा अपनी गरीबी से तंग आकर वे एक दिन कृष्ण के पास जा पहुँचे । कृष्ण ने उनका अत्यन्त भावभीना आदर सत्कार किया और उनका दारिद्र्य हमेशा के लिए दूर कर दिया ।

बापुरो - बेचारा, गरीब, असहाय

मिताई-जोग - मित्रता के योग्य

लघु - छोटी चीजों को, गरीब या तुच्छ व्यक्ति को

तरवारि -तलवार

अभ्यास

वोध और विचार :

१. संसार में साधु क्यों शरीर धारण करते हैं ? और कैसे ?

२. मृत्यु के बारे में कबीर के क्या विचार हैं ?

३. कबीर ने निन्दक को पास रखने के लिए क्यों कहा है ?

४. माया और छाया के बारे में कबीर ने क्या कहा है ?

५. सूर भगवान के चरण-कमल की बंदना क्यों करते हैं ?

६. तुलसी ने संत को हंस के साथ क्यों तुलना की है ?

७. सत्संग के बारे में तुलसी के विचारों को व्यक्त करो ।

८. सुई के बारे में रहीम ने क्या कहा है ?

९. प्रेम के बारे में रहीम के क्या विचार हैं ?

१०. विपत्ति की आशंका रहने पर किन-किन को प्रिय बात नहीं बोलनी चाहिए ?

११. आशय स्पष्ट करो :

(क) ना जानौं कित मारिहै, क्या घर क्या परदेश ।

(ख) बिन पानि साबुन बिना निर्मल करे सुभाय ।

(ग) जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै अंधे को सब कछु दरसाई ।

(घ) संत हंस गुन गहहिं पय परिहरि बारि विकार ।

(ङ) रहिमन धागा प्रेम का मत तोरउ चटकाई

भाषा-बोध :

(१) निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखो ।

साधु, हरि, शरीर, पानी

(२) पंक्तियों को पूरा करो

(क) नदी न संचै———— ।

(ख) ————– गहे कर केस ।

(ग) माया——————– एक सी ।

(घ) संत हंस गुन गहहि—— ।

(ङ) राज, धरम, ————-तीनि कर होई बेगिहिं नास ।

(च) रहिमन देखि बड़न को ———— दीजिए न डारि ।

(छ) जहाँ काम आबै————- ।

अनुभव विस्तार :

(१) क्या तुम इस प्रकार की पंक्तियों की रचना कर सकते हो ? तुम भी इस प्रकार की पंक्तियाँ रचना करने का प्रयास करो ।

(२) दोहों और पदों को समझाओ और आवृत्ति करके याद रखो ।

(३) इन महापुरुषों की वाणियों को संग्रह करके अपनी कॉपी में लिखो ।